महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय बड़ौदा की पी-एच.डी उपाधि हेतु प्रस्तावित शोध प्रबंध की

शोध संक्षेपिका

शोध विषय

माला वर्मा और प्रीति सेनगुप्ता के यात्रा साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन

निर्देशकः

प्रो. (डॉ.) दीपेंद्रसिंह जाडेजा

हिंदी विभाग, कला संकाय

महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय

बड़ौदा, गुजरात

शोधार्थीः

सागर देसले

हिंदी विभाग, कला संकाय

महाराजा सयाजीराव विश्वविद्यालय

बड़ौदा, गुजरात

वर्ष २०२५

प्रस्तावना:- मनुष्य के जन्म से लेकर मृत्यु तक निरंतर यात्राएं चलती रहती हैं। मनुष्य का सम्पूर्ण जीवन एक यात्रा ही हैं। जहां वह जीवन के विभिन्न उददेश्यों को प्राप्त करने के लिए संघर्ष करता हुआ अनेक विपदाओं का सामना करता हैं। इन संघर्षमय परिस्थितियों को पूर्ण करके वह आत्मीय सुख की चाह रखता हैं। फिर उसकी एक इच्छा पूरी होती है, तो दूसरी चार इच्छाएं सामने खड़ी होती हैं। अब मनुष्य पुनः उन चार इच्छाओं को प्राप्त करने में लग जाता हैं। और फिर उसकी अगले पड़ाव की यात्रा शुरू हो जाती हैं। मनुष्य के संपूर्ण जीवन में कहीं भी ठहराव, एक स्थान पर रुक जाना दिखाई नहीं देता। यह सम्रग प्रकिया मनुष्य के जीवन की यात्रा ही हैं।

यात्रा साहित्य यायावर की प्रेम भरे मधुर अनुभूतियों को प्रस्तुत करने का सुन्दर दर्पण है। यात्रा मानव जीवन की अनिवार्य प्रक्रिया है। मानव-जाति का संपूर्ण विकास यात्रा का ही परिणाम है। परिवर्तन मनुष्य के जीवन में नवीन उत्साह पैदा करते हैं। प्रकृति की गोद में जन्मे और पले मानव में उस प्रकृति के प्रति रागात्मक भाव उत्पन्न होता है। सौन्दर्यात्मक दृष्टि से यात्रा करनेवाले यायावर की स्वतन्त्र अभिव्यक्ति को जब साहित्यिक रूप दिया जाता है तब यात्रा साहित्य विधा रूपायित होती है।

शोध विषय की प्रेरक भावभूमि:-

गद्य की अनेक विधाएं हैं, कहानी, उपन्यास निबंध नाटक एकांकी रिपोतार्ज आत्मकथा जीवनी संस्मरण तथा इन सभी विधाओं में एक नई विधा के रूप में बहुत ही प्रसिद्ध और ख्याति प्राप्त विधा है जो यात्रा साहित्य कहलाता है।

कॉलेज के शुरुआती दिनों में मुझे यात्रा साहित्य पढ़ना बहुत अच्छा लगता था, इसे पढ़ते समय में अपने बचपन की स्मृतियों और प्रवास में खो जाता था, क्योंकि क्युकी मुझे लगता था की, यात्रा साहित्य कोई साहित्यकार लिख रहा है या मेरी बचपन की यात्रा है जो मैंने अपने माता-पिता के साथ की थी। इन यात्रा वर्णन मे कभी कभी तो मुझे मेरे स्कूली दिनों का संस्मरण हो जाता था।

मैं स्कूली दिनों में राज्य स्तरीय खेलों की प्रतियोगिता में हिस्सा लेने के लिए एक शहर से दूसरे शहर एक राज्य से दूसरे राज्य (गुजरात से असम), (गुजरात से हिमाचल प्रदेश) जाते रहता था, इस यात्रा के दौरान मुझे प्रकृति की अनेक सुंदर चीजें जैसे पहाड़ नदिया झरने जंगल गांव आदि देखने को मिलते थे, मेरा मन करता था कि मैं मंजिल तक पहुंचु ही नहीं और निरंतर ऐसे ही भ्रमण करता रहूं।

जब मैं यात्रा साहित्यकारों के यात्रावृत्तांत पढ़ता था तब में देखता था कि, वही ऊंचे ऊंचे पहाड़, कभी वही नदिया, कभी वही विशाल जंगल, कभी वही प्रकृति का सौंदर्य विभिन्न परिवेश के लोग इस समय में अपने प्रवासो में खो जाता था, मुझे लगता था कि स्मृति तो वही है सिर्फ लिखने पर शब्द बदल गए हैं, फिर मेरे मन में अनेक प्रश्न आते थे क्या साहित्यकार या कोई व्यक्ति इन यात्रा के विषयों पर कुछ लिख रहे हैं या नहीं अगर लिख रहे हैं तो वह किस तरह से लिखते होंगे? उनके यात्रा के अनुभव किस तरह के रहते होंगे? यह सब बातें मेरे मन में चलती रहती थी।

इस तरह में सोचने लगा कि महिलाये यात्रा कैसे करती होंगी? महिलाओं के मन में यात्रा करते समय कैसे सवाल आते होंगे ? यात्रा करके उनके अनुभव किस तरह के रहते होंगे? यह जानने की इच्छा मेरे मन में अधिक हुई, इसलिए मैंने माला वर्मा और प्रीति सेनगुप्ता के यात्रा साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन विषय पर कार्य करने का मन बनाया।

हालांकि हिंदी साहित्य का विद्यार्थी होने के कारण मैंने हिंदी की महिला यात्रा साहित्यकार तथा गुजरात में जन्म होने के कारण यहां पले-बले होने के कारण यहां के लोगों की भाषा, रहन-सहन, सभ्यता को जानने के कारण गुजराती की महिला यात्रा साहित्यकार, उनके यात्रावृत्तांत पर शोध कार्य करने का मन बनाया।

सामग्री संकलनः-

सामग्री संकलन में आलोच्य लेखिकाओं के प्रकाशित एवं पुस्तकों एवं लेखों का, संकलन किया है तथा उन पर किये गए शोध कार्यों एवं समीक्षात्मक पुस्तकों को संकलित किया है।

शोध कार्य के सामग्री संकलन के लिए विभिन्न विश्वविद्यालयों के पुस्तकालयों, पुस्तक मेले, तथा राष्ट्रीय व अंतरराष्ट्रीय सेमीनार, पत्र पत्रिकाएं इत्यादि स्त्रोतों से सामग्री को संकलित किया।

सामग्री संकलन के अन्य स्त्रोतों में लेखिकाओं से साक्षात्कार, और वर्तमान युग मे शोध का सबसे सहायक माध्यम इंटरनेट पर उपलब्ध सामग्री का भी उपयोग किया।

पूर्ववर्ती शोधकार्यः-

माला वर्मा और प्रीति सेनगुप्ता के यात्रा साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन इस विषय पर पूर्ववर्ती शोध कार्य अब तक नहीं हुआ है, इस विषय में यह प्रथम शोध कार्य है।

इसके पूर्व, हिंदी का यात्रा साहित्य सन १९६० से १९९० तक विषय पर डॉ रेखा प्रवीण उप्रेती जी ने अद्भुत कार्य किया है, साथ ही बी. आर. धापसे जी ने हिंदी यात्रा साहित्य और स्त्री यात्रा साहित्यकार, शोध विषय पर कार्य करके यात्रा साहित्य के भंडार में वृद्धि की हैं। प्रस्तुत शोधकार्य के माध्यम से हम इसके आगे का मार्ग बनायेंगे।

शोध विषय का उद्देशः-

जो लोग यात्रा के पहले यात्रा के स्थलों की पूरी जानकारी लेना चाहते है, उन सभी यात्रियों के लिए, जो प्रवास स्थलों की प्रामाणिक जानकारी चाहते हैं उनके लिए भी हमारा शोध कार्य उपयोगी सिद्ध होगा।

इस शोध कार्य से हिंदी साहित्य तथा गुजराती साहित्य के उन सभी विद्यार्थियों को लाभ होगा जो यात्रा साहित्य विषय पर कार्य करना चाहते हैं, उनके लिए यह शोध सामग्री ग्रंथ के रूप में उपयोगी साबित होगा।

भारत में अनेक ऐसे विश्वविद्यालय है जहां पहले यात्रा साहित्य किसी यूनिट के रूप में पढ़ाया जाता था, अगर इस क्षेत्र में अच्छे खासे कार्य होंगे और इस क्षेत्र में यात्रा साहित्य पर लिखी हुई पुस्तकें तथा उन पर किए गए शोध कार्यों के सहारे एक पूरे प्रश्नपत्र के रूप में यात्रा साहित्य पढ़ाने को इच्छुक विश्वविद्यालयों के लिए भी उपयोगी सिद्ध होंगे ।

वर्तमान में इसकी अहमियत होने के कारण अब मैं देख रहा हूं कि, राजस्थान के तथा पूर्वोत्तर भारत के बहुत सारे विश्वविद्यालयों ने यात्रा साहित्य पर पूरा प्रश्न पत्र ही बनाया है, और एक विषय के रूप में यात्रा साहित्य पढ़ाया जा रहा है, इस क्षेत्र में काम करने की म्हणती आवश्कता है। इस विषय पर अधिक शोध कार्य होगा तो पढ़ाने के लिए अधिक सामग्री प्राप्त होगी, तथा हम ऐसा मान सकते हैं कि आने वाले समय में भारत के सभी विश्वविद्यालयों में यह विषय पढ़ाया जाएगा।

शोध पद्धतिः-

प्रस्तुत शोध प्रबंध मे मैंने तुलनात्मक पद्धति, विवरणात्मक पद्धति, समीक्षात्मक पद्धति, साक्षात्कार पद्धति का प्रयोग किया है।

प्रस्तुत शोध प्रबंध पाँच अध्यायों मे विभक्त है। जिसमे **प्रथम अध्याय** - यात्रा साहित्य का स्वरूप निर्धारण है। प्रस्तुत अध्याय के अंतर्गत यात्रा साहित्य की परिभाषा, स्वरूप, विकास एवं तुलनात्मक दृष्टि का अध्ययन किया गया है। साथ ही अनादि काल से लेकर वर्तमान तक मनुष्य के यात्रा इतिहास को स्पष्ट करने का प्रयास किया है।

द्वितीय अध्याय के अंतर्गत माला वर्मा का व्यक्तित्व व कृतित्व का अध्ययन किया गया है। माला वर्मा बंगाल की पृष्टभूमि से आती है, और दुनिया के साठ प्रतिशत भूभाग पर अपनी उपस्थिति दर्ज करा चुकी हैं। पिछले पँचास वर्षों से माला वर्मा निरंतर यात्राएं कर रही हैं। इनके बीस से अधिक यात्रा वृतांत उपलब्ध है।

तृतीय अध्याय में प्रीती सेनगुप्ता का व्यक्तित्व व कृतित्व का अध्ययन किया गया है। प्रीती सेनगुप्ता गुजरात की पृष्टभूमि से आती है, वर्तमान मे लेखिका अमेरिका मे रहती है। गुजराती यात्रा साहित्य की प्रख्यात लेखिका के रूप मे जानी जाती है। पिछले साठ वर्षों से प्रीती सेनगुप्ता निरंतर यात्राएं कर रही हैं। इनके पच्चीस से अधिक यात्रा वृतांत उपलब्ध है।

चतुर्थ अध्याय के अंतर्गत माला वर्मा एवं प्रीति सेनगुप्ता के यात्रावृत्तांतो में विविध आयाम जैसे कि धार्मिक' सामाजिक' ऐतिहासिक, सांस्कृतिक, प्राकृतिक, मनोरंजन प्रधान, इन आयामों के आधार पर दोनों लेखिकाओं ने विभिन्न मुद्दों पर जो चर्चा की है. उनकी साम्यता एवं असमानता को रेखांकित किया है।

पंचम अध्याय के अंतर्गत माला वर्मा और प्रीती सेनगुप्ता के यात्रा साहित्य का यात्रा के तत्वों के आधार पर तुलनात्मक अध्ययन में यात्रा के रोचक प्रसंगों, स्थानीय जीवन मूल्य, परंपराएं, भारतीयता के तत्व , इतिहास बोध, एवं उदेश्य इत्यादि तत्वों का विश्लेषण किया गया है। जिसमे दोनों लेखिकाओं के लेखकीय दृष्टिकोण एवं समाज की बारीकियों को चित्रित करता है।

उपसंहारः- अंत मे उपसंहार देते हुए शोध प्रबंध माला वर्मा और प्रीती सेनगुप्ता के यात्रा साहित्य का तुलनात्मक अध्ययन संबंधी मान्यताओं, स्थापनाओं एवं शोध सार को प्रति स्थापित करने का विनम्र प्रयास किया है।

उपसंहार के पश्चात संदर्भ ग्रंथ सूची को प्रस्तुत किया गया है, जिसके अंतर्गत आधार ग्रंथ, सहायक ग्रंथ, व पत्र पत्रिकाओं की सूची दी गई है।

शोध कार्य की रूपरेखा

प्रथम अध्याय

१. यात्रा साहित्य का स्वरूप निर्धारण

१.१ यात्रा एक परिचय

१.२ यात्रा साहित्य की परिभाषा

१.३ यात्रा साहित्य की उपादेयता (महत्व)

१.४ तुलनात्मक अध्ययन एवं स्वरूप

१.५ तुलनात्मक शब्द का अर्थ

१.६ तुलनात्मक शब्द की परिभाषा

१.७ तुलनात्मक अध्ययन का महत्व

१.८ तुलनात्मक अध्ययन की आवश्यकता

द्वितीय अध्याय

२. माला वर्मा का व्यक्तित्व व कृतित्व:-

२.१ जीवन परिचय

२.२ शिक्षा-दीक्षा

२.३ पारिवारिक पृष्टभूमि

२.४ विवाह

२.५ बाल-बच्चे (संतान)

२.६ माला वर्मा का कृतित्व

२.७ कविता संग्रह

२.८ लघुकथा संग्रह

२.९ कहानी संग्रह

२.१० यात्रा वृतांत

२.११ सम्मान

२.१२ प्रकाशन/प्रसारण

२.१३ सम्पादन

२.१४ हिन्दी यात्रा साहित्य के विकास में माला वर्मा का योगदान

२.१५ माला वर्मा का साक्षात्कार

तृतीय अध्याय

३. प्रीति सेनगुप्ता का व्यक्तित्व व कृतित्व

३.१ जीवन परिचय

३.२ शिक्षा-दीक्षा

३.३ पारिवारिक पृष्टभूमि

३.४ विवाह

३.५ प्रीति सेनगुप्ता का कृतित्व

३.६ काव्य संग्रह

३.७ निबंध संग्रह

३.८ कहानी संग्रह

३.९ उपन्यास

३.१० बंगाली साहित्य से अनुवाद

३.११ अंग्रेजी पुस्तक
३.१२ यात्रा साहित्य
३.१३ सम्मान
३.१४ पुरस्कार और पदक
३.१५ गुजराती यात्रा साहित्य के विकास में प्रीति सेनगुप्ता का योगदान
३.१६ प्रीति सेनगुप्ता का साक्षात्कार

चतुर्थ अध्याय

४. माला वर्मा एवं प्रीति सेनगुप्ता के यात्रावृत्तांतो में विविध आयाम तुलनात्मक अध्ययन
४.१ ऐतिहासिक आयाम
४.२ सामाजिक आयाम
४.३ सांस्कृतिक आयाम
४.४ धार्मिक आयाम
४.५ प्राकृतिक आयाम

पंचम अध्याय

५. माला वर्मा और प्रीती सेनगुप्ता के यात्रा साहित्य का यात्रा के तत्वों के आधार पर तुलनात्मक अध्ययन
५.१ प्रत्यक्ष अनुभव
५.२ व्यापक जीवन
५.३ कलात्मकता
५.४ पात्र एवं चरित्रांकन
५.५ परिवेशांकन
५.६ इतिहास बोध
५.७ उद्देश्य
५.८ रोचकता
५.९ भारतीयता के तत्व

संदर्भ ग्रंथ सूची

- आधार ग्रंथः-
- आइये मलयेशिया-सिंगापुर-थाईलैंड चलें
- पिरामिडों के देश में
- यूरोपः यात्रा संस्मरण
- अमेरिका में कुछ दिन
- ग्रीस एवं दुबई
- चीन देश की यात्रा
- जॉर्डन
- टर्की
- विश्व के २० आश्चर्य

- कनाडियन रॉकीज एंड अलास्का क्रूज
- स्कैन्डिनेविया
- आइसलैंड-लैपलैंड
- जापान
- केन्या
- साउथ अमेरिका (ब्राजील, अर्जेंटीना, पेरू)
- कम्बोडिया-वियतनाम
- ईस्टर्न यूरोप
- साउथ अफ्रीका
- इंग्लैंड-आयरलैंड
- अंटार्कटिका - एक अनोखा महादेश
- स्पेन पुर्तगाल
- अज़रबैजान
- आर्कटिक ध्रुवीय भालू का देश
- पूर्वा
- दिकदिगंत
- सूरज संगे, दक्षिण पंथे
- अंतिम क्षितीजो
- धवल आलोक
- मन तो चंपानु फूल
- उत्तरोत्तर
- किनारे किनारे
- दुरनों आवे साद
- देश-देशाव
- एक पंखीना पीछा सात
- नमनी वहे छे नदी
- रिझो रे दरिया देव
- नूरना काफला
- देवो सदा समीपे
- खिल्या मारा पगला
- सुतर स्नेहना
- आटली बधी भूमि
- अपराजिता
- संबंधनी ऋतुओ
- अंत:पुरम
- जड़ मध्ये स्थड
- पथ ने पथिक

सहायक संदर्भ ग्रंथः-

जहां फव्वारे लहू रोते हैं - नासिरा शर्मा
अरे यायावर रहेगा याद - अज्ञेय
शताब्दी के ढलते वर्षों में - निर्मल वर्मा
सृष्टि का मुकुट कैलाश मानसरोवर - हरिवंश
वह भी कोई देश है महराज - अनिल यादव
आजादी मेरा ब्रांड - अनुराधा बेनीवाल
लोग जो मुझ में रह गए - अनुराधा बेनीवाल
मेरी समीक्षा माला - डॉ. अखिलेश पालरिया
देश देश परदेश - श्री प्रकाश शुक्ल
तुलनात्मक साहित्य भारतीय परीप्रेक्ष्य - इंद्रनाथ चौधुरी
तुलनात्मक साहित्य सैद्धांतिक परिप्रेक्ष्य - हनुमानप्रसाद शुक्ल
तुलनात्मक अध्ययन निकष एवं निरूपण - प्रो.आई.एन.चंद्रशेखर रेड्डी
हिन्दी गुजराती दलित कहानियों का तुलनात्मक अध्ययन - डॉ. स्वीटी घुघरावाला
नागार्जुन और नारायण सुर्वे के काव्य में प्रगतिशील चेतना - डॉ. अलका निकम वागदरे

- पत्र-पत्रिकाएं:-
- भाषा
- मधुमति
- वागर्थ
- साहित्य अमृत
- पुष्पगंधा
- आदि।

....